बस्तर चो फुलबाड़ी

(हल्बी बाल गीत-संग्रह)

शकुंतला तरार

बस्तर चो फुलबाड़ी

हल्बी बाल गीत-संग्रह

•

शकुंतला तरार

वैभव प्रकाशन
रायपुर (छ.ग.)

2

बस्तर चो फुलबाड़ी

हल्बी बाल गीत-संग्रह

•

प्रकाशक
वैभव प्रकाशन
अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748
e-mail : sahityavaibhav@gmail.com
www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू
प्रथम संस्करण : 2016
मूल्य : 50.00 रुपये
कॉपी राइट : लेखकाधीन
टाईप सेटिंग : संदीप तरार
मो. 95890-52209
संयोजन: श्वेता तरार

•

Published by
Vaibhav Prakashan
Amin Para, Purani Basti
Raipur, Chhattisgarh (India)
First Edition : 2016
Price: Rs.50.00

मचो गोठ-

हुन नानी-नानी पीला-झीला लोलो-बालो मन काजे जे एभय-एभय इसकुल जाऊन पढ़ुक लिखुक सीखलासत मचो बाटले गोटोक मया चो चिन्हा आय ए पीला गीद।

शकुंतला तरार

अनुक्रमणिका

1.	सीत	07
2.	बाघ राजा	08
3.	कोयली	09
4.	सुरुज दादा	10
5.	बरखा	11
6.	दादा रे रे लोयो	12
7.	आमचो देस भारत देस	13
8.	पानी	14
9.	डंडा सरन सिक्छा	16
10.	बाघ	17
11.	गनती गना	18
12.	चिड़ई उड़ली	19
13.	फुलबाड़ी	20
14.	रोज चो बूता	21
15.	जय माय भारती	22
16.	तिरंगा	23
17.	चुलबुल बुल	24
18.	पीला–झीला	25
19.	खूबे पढ़	26
20.	बिहान होली	27
21.	हांसते राहा	28

सीत

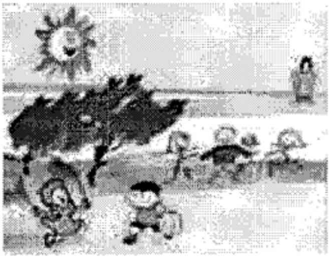

डूहडूहा धूकेसे हांडा जुड़ी लागेसे
आईग पूरे बसू रतोर खूबे भायेसे

आमचो आजी खोकलेसे आजा कँहरेसे
जूड़ी पानी के छियून भाती नोनी डगायेसे

गुलाय मंझने घाम ने बसून आजी झुमेसे
खतड़ी धूसा के सूतती बेरा ओढुक भायेसे

खोटला जराउन आईग पूरे जमाय बसू रसोत
सोवतो बेरा आपा पूती हुताय ढुंलगुन जासोत

जुगे लगे सोऊ रलो आमचो घरो सियान
धूसा के धरली आईग जरलो धन रे भगवान

हुनचोय काजे बलेंसे एदे सूना देऊन धियान
पिला तुमी आया बूबा चो गोठ के राखा मान
(लेजा धुन में)

■■

बाघ राजा

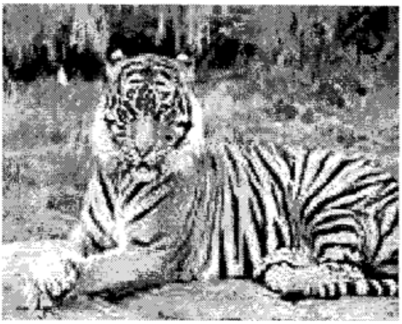

बाघ राजा बाघ राजा
बन भीतरे तूचो खाजा

मनुख तूके डरसोत
तुचो भय ने परासोत

बेंदरा भालू लमहा कोडरी
पुचुंग पाचंग डगासोत

जेभे तूय गरजना करसीत
खमन हालेसे धरेसे सीत

तूय बन चो राजा ना
कोलिया बजाये बाजा ना

■■

कोयली

कोयली रानी कोयली रानी
कुहू–कुहू करेसे

कोन राज ले इलीस तूय
कोन राज ने जासे बे

रूख–रूख ने आमा मऊड़
तूचो होली साज सिंगार

टीप–टीप ने डगासित
नंगत गीद के गावसीत

इया आमी बले जावां
नंगत–नंगत गीद के सुनवाँ

■■

सुरूज दादा

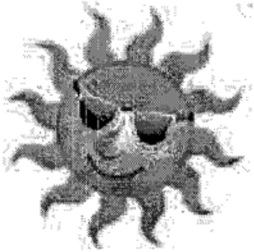

सुरूज दादा सुरूज दादा
रोजे अएसे रोजे जाएसे
बुलते रहेसे
बिहाने अएसे जातो बेरा
संज करेसे
सुरूज दादा सुरूज दादा
एके बलूंसे सुरूज दादा
रोजे अएसे रोजे जाएसे
बुलते रहेसे
एचो इले दिन पाहाएसे
गेले होएसे राती
पिरथी ने बुलून बुलून
बनेसे हामचो साथी।

■■

बरखा

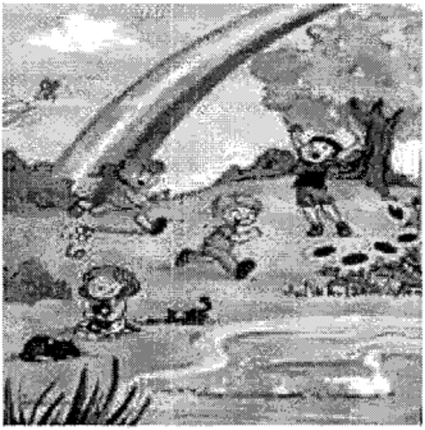

बरखा रानी बरखा रानी
कितरो कितरो देसीत पानी

हवा पानी नंगत लागेसे
बरखा खूबे भायेसे

डारा पाना लेहरावसत
नवा बीजा ने गाजा फुटेसे

फुटलो गाजा पाना पकासत
ओयां मेंडका नरियावसत

बेड़ा-खाड़ा भरून जासत
तूय नी इले धुरधानी

बरखा रानी बरखा रानी
कितरो कितरो देसीत पानी

■■

दादा रे रे लोयो

झुणगा बाड़ी दादा माचो रेरे लोयो
झुणगा बाड़ी दादा माचो रेरे लोयो
रेरे लोयो दादा रेरे लोयो

कंवरी बांगा खाँव रे हांडा खाऊन दखवां ना
सिलेट धरून इसकुल जाऊन पढ़ून दखवां ना
दादा रेरे लोयो

सरगन तारा फयले जाये कसन करवाँ ना
नोनी आया चो कपारे टिकली बरेसे दखवां ना
दादा रे रे लोयो

खमन राने रूख राई जिनीस आमचो जीवना
लेहरा–धुका अये कुधुर उड़े कसन रेंगवां ना
दादा रे रे लोयो

■■

आमचो देस भारत देस

आमचो देस भारत देस
हामके बलसत भारतीय
आमचो धन भाग
इथा जनम धरलूँ
एई नंदी एई भुईं
एई माटी आमचो
एई डोंगरी एई खमन
एई जलथल हामचो
एई माटी के सरन करूंसे
एई भूयं के बंदन करूंसे।

■■

पानी

पानी आमचो जीवना आय
बिन पानी चो मरना आय
पानी आमचो जीवना आय

बादर बनून बरखेंसे मयं
भूंय ने समाउन जायेंसे
चुँआ डोबरी तरई बनून
तुमचो पियास बुतायेंसे
नंदी ढोड़ी जलारंग करेंसे
डोंगरी ऊपर ले फूटेंसे
बाचलो आरू उपराहा होले

महासमुंद ने जायेंसे
एई मचो कहनी आय
एई मचो कहनी आय।।
महासमुंद ने जाउन भाती
भाप बनून उड़ेंसे
बादर बनून घुड़लुन घुड़लुन
तुम चोय लगे अयेंसे
फेर जायेंसे फेर अयेंसे
खलखल खलखल बोहेंसे
बेड़ा खाड़ा ने हरेली तेबे
झुमुन झुमुन अयेसे

■■

डंडा सरन सिक्छा

सरन–सरन इलूँ एदे आमी भगबान
पढ़ून–लिखून सजन बनवां दिया बरदान
तुमचो नाँव के आमी धरूंदे
भूलकलो के बाट दखाऊंदे
नंगत सिक्छा मिरली जाले
बनूंदे पाछे हामी महान।
पढ़ून–लिखून सजन बनवाँ दिया बरदान
आमचो जीवना रूख राई
कांदा कोचई डोंगरी पाहाड़
लंदी–फंदी के घुचाउन करूंदे
आपलो जस आरू मान
पढ़ून–लिखून सजन बनवाँ दिया बरदान।

■■

बाघ

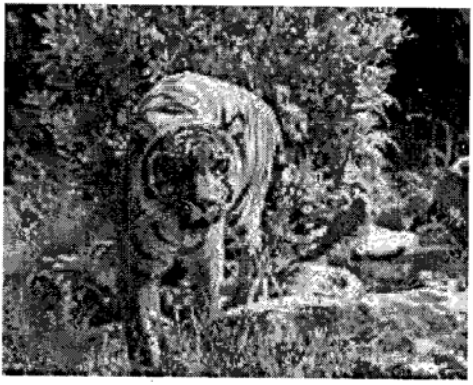

बाघ बन ने रहेसे
खुंजी खुंजी दखेसे
राजा आय हुन बन रान चो
आपलो मन चो करेसे
आपलो मन ने खमन बुले
मिरगा कोनी दखा दीले
रांय रांय कुदाउक धरे
नोकी नोकी पाँय चो नख
भूक लागले पारद करे
नहाले करपन ने बसू रहे
पींवर-पींवर देहें हुनचो
करया-करया बाना रहे।।

■■

गनती गना

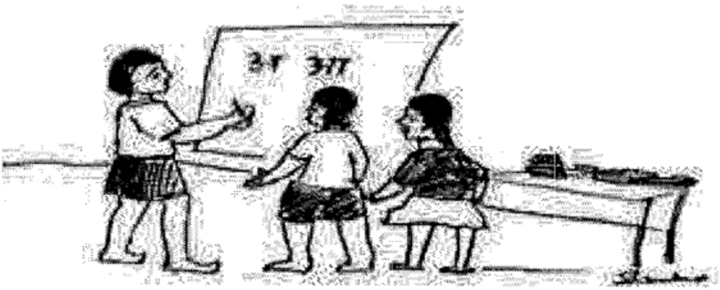

एक दूय तीन चार
बलून होवा तूमी तियार
सिक्छा चो जोत के बारून
पढ़ून लिखुन होवा हुसियार
पाँच छ्य सात आठ
पिला दाँय ले पढ़ा पाठ
पाठ के पढ़ून गियान पावासे
अंडखा चेपा कोनी नी बलदे
नव दस चघासे बस
इतरोय ने पूरेदे जस
नी भटादे कोनी तुमके
नानी बड़े चो मेटेदे भेद ।।

■■

चिड़ई उड़ली

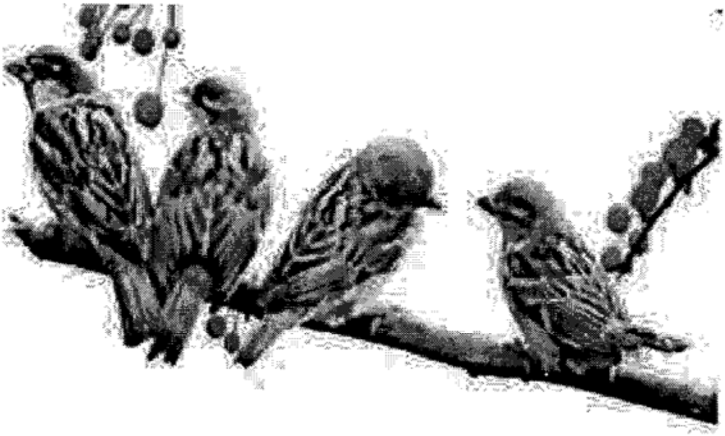

चिड़ई उड़ली चेंव-चेंव
बिलई करली मेंव-मेंव
भुर नांय ले उड़ली चिड़ई
बिलई दखली एँव हेंव
बाग के दखून चीतर पराली
पराला लमहा कोडरी
बोबो चोरून खाते रली
जरून गेली डोकरी।

■■

फुलबाड़ी

आमचो घरे फुलबाड़ी
रंग रंग चो फूल
कोनी ढूंडी ढूंडी आसोत
कोनी फूटून जासोत
कोनी बूटा चो पाना झड़े
कोनी पिलखाउन रसोत
जसन हरीक दखा दये फूल
हुसने तूमी हरीक राहा
कएर कुचर के छाँडून भाती
हरीक उदीम ने राहा।

■■

रोज चो बूता

बड़े बिहाने उठा तुमी
दथुन मुखारी करा
तेचो पाछे नहाउन धोउन
देहें के सफा करा
आया चो रांधलो भात के खाहा
चुढ़ालो पेज के खावा
डरेस पींधून बस्ता धरून
पाछे इसकूल जावा
इसकूल जाउन उथा तूमी
मन के लगाउन पढ़ा
समझा बुझा लिखा कापी ने
आपलो भविस गढ़ा
संज होले घर जाहा
डंडकी डंडकी खेला
आया बूबा चो सांगलो बूता
चांडे चांडे करा।।

■■

जय माय भारती

जय जय जय माय भारती
हामी तूचो उतराऊंदे आरती
जय भारती जय भारती।
ऊपरे राखा आसे
डेंग डोंगरी हिमालय
खाले पांय पखारेसे
महासमुंद हिंद महासागर
जय भारती जय भारती।
उदती भगवान जगन्नाथ
बुड़ती सहारा रेगिस्तान
मंजी गते खमन रान
जमाय हामचो हिंदुस्तान
जय भारती जय भारती।

■■

तिरंगा

लेहराउन लेहराउन लेहरायसे तिरंगा
हालुन डोलुन हांसुन गीद गाये तिरंगा
उचो थाको डेंग जमाय थाने
ऊपरे नीला अगासा ने
खाले खोल महासागर ने
जमाय संवसार ने नाव कमावा
लेहराउन तुमके बलेसे तिरंगा।
जुग कितरो घुचुन जाए
समे कितरो बाढ़ून जाओ
इया जमाय पिला एक होऊन
कयरी बयरी के फिंगुन पकावा
सत चो बाट के दखाये तिरंगा।

■■

चुलबुल बुल

चुलबुल बुल चुलबुल बुल
पीला गोहड़ा खोरे बुलबुल
चुलबुल बुल चुलबुल बुल रे
बेंदरा के दखले बिजड़ाउन देसत
ओंडार छाता के भिरलाउन देसत
इथा अपटी उथा कचाड़ी
भंवरा बाटी खेलत गुच्चुल
चुलबुल बुल चुलबुल बुल रे।।

परेवाँ गुड़ा ने पखना पकाला
काकड़ा दाखुन थापला
खमन रान ने बुलुन बुलुन
अमली आमा गिरल फुल
चुलबुल बुल चुलबुल बुल रे ।।

■■

पीला-झीला

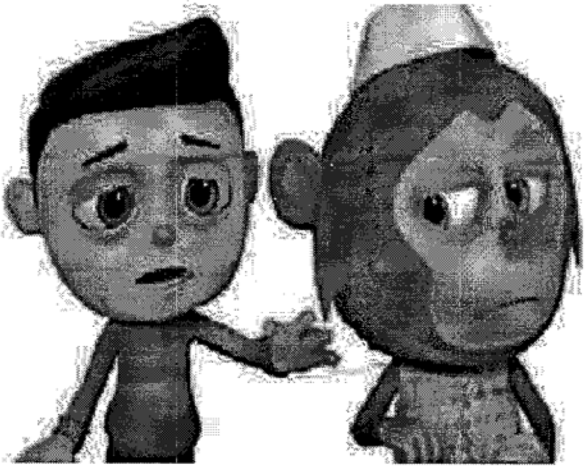

चेता-चेता हो पीला-झीला मन
बिकास चो बाट ने रेंगा सुल।
नोनी बाबू जमाय चेता
जुगे नी होवा चुलचुल ।
बाग भालू लमहा कोडरी
पढुक जाहा तुमी इसकुल ।
सोज बाट ने रेंगा तुमी
जुगे नी होवा मतभुल ।

■■

खूबे पढ़

सोमारू
इथा आव
नी डर
टंगया धर
खमन जा
बूटा खन
झिटका बीन
भकंदर
फिरून आव
घरे संगाव
नाहाउन खोरून
पेज खा
डरेस पींध
इसकुल जा
खूबे पढ़
आघे बढ़ ।।

बिहान होली

उठा उठा बिहान होली
भरली बेड़ा भरली डोली
नोनी जायसे इसकूल
बाबू नी होसे चुलचुल
किताब पढ़ा पोथी पढ़ा
एदायं पढ़ा से रमायन।
नवा नवा उदिम सीखा
खोरेखोर रेंगून जाहा
बड़े मन के जुहार बला
सियान सजन चो गोठ के सुना।

■■

हांसते राहा

खेला कूदा नंगत राहा
हांसते राहा हांसते राहा।
कांई बात चो चिंता फिकिर
तुमी नी करा हांसते राहा।
नंदी पाहाड़ कोंडी बूची खेला
खेलते खेला हांसते राहा।
कांई बले अलहन इले
सायस करा हांसते राहा
अरन–बरन चो फूल फूटे
हुसने हांसा हांसते राहा।

■■

नाम	-	**शकुंतला तरार** (कवयित्री, संपादक)
जन्म स्थान	-	तहसील पारा, जिला-कोन्डागांव बस्तर (छत्तीसगढ़)
माता	-	स्व. श्रीमती जमुना देवी देवांगन
पिता	-	स्व. श्री रतनलाल देवांगन
पति	-	श्री टी.सी. तरार
शिक्षा	-	एम.ए. (राजनीति शास्त्र), एल.एल.बी. डिप्लोमा - पत्रकारिता, उर्दू, लोकसंगीत, एम.ए. शास्त्रीय संगीत।

प्रकाशित पुस्तकें -
- 'बन कैना' छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह
- बस्तर की लोक कथाएं
- बेटियां छत्तीसगढ़ की
- बस्तर का क्रांतिवीर गुंडाधुर - खण्ड काव्य
- टेपारी - हल्बी हाईकू एवं कविता संग्रह
- घरघुंदिया - छत्तीसगढ़ी कविता संग्रह
- मेरा अपना बस्तर - हिन्दी कविता संग्रह
- प्रफुल्ल कुमारी देवी

सम्मान -
- मिनी माता सम्मान 2001
- छत्तीसगढ़ की प्रथम देवांगन महिला साहित्यकार सम्मान
- प्रभावती सम्मान 2005 सुलभ साहित्य अकादमी दिल्ली
- वरिष्ठ कवयित्री सम्मान, वैभव प्रकाशन सम्मान, रायपुर
- सुभद्राकुमारी चौहान रजत स्मृति सम्मान 2006 हिन्दी भाषा साहित्य परिषद खगड़िया, बिहार

एवं 2017 त क अनेकों सम्मान।

विधा - हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, हल्बी में समान रूप से कहानी, कविताएं, लेख आदि का निरन्तर लेखन एवं प्रकाशन। लोक-संस्कृति में विशेष रूचि।

संपादन -
- बिहनिया (संस्कृति विभाग छ.ग. शासन)
- नारी का संबल (त्रैमासिक पत्रिका)

स्थायी पता - प्लाट नं. 32,सेक्टर-2, एकता नगर गुढ़ियारी, रायपुर (छ.ग.) पिन नं. - 492009

दूरभाष - 0771-2592194, मोबाइल - 94255 - 25681